1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा द्युग्ने दुरिता तर त्वम्। - सामवेद 1325

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो !

आप हमें सब पापाचारणों से अवश्य दूर करें।

O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 41, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 18 दिसम्बर, 2017 से रविवार 24 दिसम्बर, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

91वें बलिदान दिवस (23 दिसम्बर) पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द का नवयुवकों के लिए उद्बोधन

– डॉ. उमा शशि दुर्गा

... कई लोग योग को भी लड़कों के लिए खतरनाक समझते हैं। मैं कहता हूं कि यदि माता के गले से लिपटना खतरनाक है, तो योग भी खतरनाक है। युवावस्था में ही धर्मशील बनो, कौन जानता है कि इसी समय मृत्यु हो जाए। बालक, वृद्ध, युवा सबको इसी समय धर्म में लग जाना चाहिए। मुझे निश्चय है कि आर्य युवक केवल रोटी के लिए नहीं पढ़ रहे हैं। मैं समझता हूं कि वे अपने हृदय के अन्धकार को दूर करने के लिए पढ़ रहे हैं। अशांतावस्था, शांतस्वरूप के दर्शन के बिना कभी दूर नहीं हो सकती है। मैं चाहता हूं कि उपनिषद का यह वाक्य प्रत्येक युवक के हृदय पर अंकित हो–यह आत्मा सत्य से मिलती है, सत्य तप से मिलता है, सम्यक ज्ञान के बिना कठिन और ब्रह्मचर्य के बिना सम्यक् ज्ञान असम्भव है। ब्रह्मचर्य सब धर्मों का मूल है, इसलिए प्यारे युवकों, उस ब्रह्मचर्य का पालन यत्न से करो।....

स्वामी श्रद्धानन्द 19वीं शताब्दी के प्रखर नेता थे। उनका सबसे बड़ा लक्ष्य नवयुवकों को तैयार करना था जो जाति और राष्ट्र के लिए सर्वाधिक उपयोगी हो सके। वे केवल पुस्तकीय ज्ञान को महत्त्व न देकर उनके सर्वांगीण विकास पर बल देते थे। सन् 1913 को दिया गया नवयुवकों के लिए उनका उद्बोधन आज के परिवेश में और भी प्रासंगिक हो उठता है। उनका कथन था–''जाति की भविष्यत् आशाओ! आज मुझे आपने जो सेवा का अवसर दिया है, उसके लिए आपका बहुत धन्यवाद करता हूं। सबसे पहला मेरा यह निवेदन है कि नवयुवकों को कोई भी काम छोटा न समझना चाहिए। शिखर पर पहुंचने के लिए पहली सीढ़ी पर चढ़ना जरूरी है। आर्य युवकों, हमारे देश को इस समय ऐसे कार्यकर्त्ताओं की जरूरत है जो छोटे से छोटा काम करने के लिए तैयार हों और मेरा विश्वास है कि वे ही कार्यकर्त्ता बड़े काम कर सकेंगे।

दूसरा संदेश, जो मैं आप तक पहुंचाना चाहता हूं, वह उपनिषदों के शब्दों में नहीं पहुंचाया जा सकता। कई महानुभावों का मत है कि उपनिषदें लड़कों के हाथ में नहीं देनी चाहिए। उनकी प्रतिष्ठा करते हुए भी मुझे उनसे मतभेद प्रकट करना पड़ता है। मेरी सम्मति में उपनिषदें लड़कों के लिए बड़ा लाभदायक स्वाध्याय है। कई लोग योग को भी लड़कों के लिए खतरनाक समझते हैं। मैं कहता हूं कि यदि माता के गले से लिपटना खतरनाक है, तो योग भी खतरनाक है। युवावस्था में ही धर्मशील बनो, कौन जानता है कि इसी समय मृत्यु हो जाए। बालक, वृद्ध, युवा सबको इसी समय धर्म में लग जाना चाहिए। मुझे निश्चय है कि आर्य युवक केवल रोटी के लिए नहीं पढ़ रहे हैं। मैं समझता हूं कि वे अपने हृदय के अन्धकार को दूर करने के लिए पढ़ रहे हैं। अशांतावस्था, शांतस्वरूप के दर्शन के बिना कभी दूर नहीं हो सकती है। मैं चाहता हूं कि उपनिषद का यह वाक्य प्रत्येक युवक के हृदय पर अंकित हो–यह आत्मा सत्य से मिलती है, सत्य तप से मिलता है, सम्यक ज्ञान के बिना कठिन और ब्रह्मचर्य के बिना सम्यक् ज्ञान असम्भव है। ब्रह्मचर्य सब धर्मों का मूल है, इसलिए प्यारे युवकों, उस ब्रह्मचर्य का पालन यत्न से करो।

अंत में मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं कि मैं उपदेश नहीं देता, क्योंकि मैं उपदेश देने के योग्य नहीं हूं। हम वृद्ध आपको किस मुंह से उपदेश दें; बूढ़ों का यह कहना था कि वे आर्य धर्म रूपी फुलवाड़ी की रक्षा के लिए कांटे बन जाते और शत्रुओं से इसकी रक्षा करते। परन्तु कहते शोक होता हे कि हमने कांटे बनकर रक्षा करने की जगह एक दूसरे को चुभना शुरू कर दिया। नवयुवकों, हम अपने कर्त्तव्य से च्युत हुए हैं, तुम इस फुलवाड़ी के ऐसे फूल बनो जिसकी महक से सारी फुलवाड़ी महक जावे। सेवक बनने का यत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्य जाति को सेवकों की बहुत अधिक आवश्यकता रहती है। जब कभी आपका पैर डगमगाने लगे तो राम के सेवक हनुमान का स्मरण कर लिया करो जिन्होंने कहा था कि राम के नाम के बिना मैं इस मोतियों की माला का क्या करूं जो मुझे पुरस्कार स्वरूप मिली है। नवयुवकों, मैं पूछता हूं क्या तुममें से कोई भी दयानन्द रूपी राम का सेवक बनने का यत्न न करेगा? महावीर के बिना दयानन्द का काम अधूरा पड़ा है। मुझे पूरी आशा है कि दयानन्द के काम को पूरा करने के लिए पाप की लंका का विंध्वंस करने के लिए तुम्हीं में से महावीर निकलेंगे।''

स्वामी श्रद्धानन्द का प्रस्तुत उद्बोधन यदि आज के नवयुवक आत्मसात कर लें तो निश्चित रूप से देश का स्वरूप और दिशा बदल सकती है।

– 74, साक्षर अपार्टमेंट, ए-4 पश्चिम विहार, नई दिल्ली –110063

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला– 2018 के अवसर पर प्रगति मैदान में

नव दिवसीय वैदिक साहित्य प्रचार–प्रसार महायज्ञ

50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/– रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लक्ष्य : अपनी आहुति अवश्य दें

आपकी एक आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

स्टाल उद्घाटन	हिन्दी : हॉल नं. 12	बाल साहित्य	मेला समापन
6 जनवरी, 2018 प्रात: 11:30 बजे	स्टाल : 282–291	हॉल नं. 7 स्टाल : 161	14 जनवरी, 2018 रात्रि 8 बजे

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/– रुपये का है, सभा को 30/– रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/– सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अत: आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/– में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।
इस वर्ष बच्चों के लिए विशेष रूप से स्टाल लिया गया है जहां बच्चों को आर्यसमाज एवं वैदिक संस्कृति से जोड़ने वाला साहित्य प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होगा।

स्टाल पर समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175, 9540012175) को नोट कराएं।

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु अधिकाधिक दान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 912010055423646 एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। सत्यार्थ प्रकाश कम मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए दान देने वाले आर्य महानुभावों एवं आर्यसमाजों की सूची पृष्ठ 5 पर प्रकाशित की गई है। इस मध्ये दान करने वाले समस्त समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। *– महामन्त्री*

जन साधारण से अपील : अपने परिवार, इष्टमित्रों एवं सहयोगियों के साथ सुविधानुसार मेले में अवश्य पहुंचें तथा सभी को प्रेरित करें

वेद-स्वाध्याय

नित्य अमरपद प्राप्ति

त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवेदिवे।
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये।। - *ऋ. 1/31/7*
ऋषिः हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः।। **देवता** - अग्निः।। **छन्दः** जगती।।

शब्दार्थ - **अग्ने** = हे प्रकाशक देव! **यः** = जो **उभयाय जन्मने** = द्विपद् या चतुष्पद्, मनुष्य या मनुष्येतर दोनों प्रकार के जीवों के भले के लिए **तातृषाणः** = अत्यन्त तृषित है, प्यासा है **तं मर्त्यम्** = उस मनुष्य को **त्वम्** = तू **श्रवसे** = यश के लिए **दिवे दिवे** = प्रतिदिन **उत्तमे अमृतत्वे** = श्रेष्ठ अमृतपद में **दधासि**= पहुंचाता है **सूरये** = और उस ज्ञानी पुरुष के लिए तू **मयः** = सुख **आकृणोषि** = करता है **प्रयः च** = और अन्न भी देता है।

विनय - हे प्रभो! संसार में ऐसे भी मर्त्य हैं जिन्हें तुम्हारी कृपा से नित्य अमरपद मिलता है, जिन्हें तुम प्रतिदिन अमृत का आनन्द चखाते हो। वे कौन हैं? ये वही हैं जिन्हें प्राणिमात्र का हित करने की प्यास लगी हुई है, जिन्हें और इच्छा नहीं है, कोई कामना नहीं है सिवाय इसके कि उनके द्वारा सदा प्राणिमात्र का (मनुष्यों का ही नहीं, किन्तु पशुजाति का भी) भला होता रहे, जो कहते हैं ''**नाऽहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नापुनर्भवम्। कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्**''।। जिन्हें दुःखितों की पीड़ा शमन किये बिना चैन नहीं मिलता, जिन्हें परदुःख-शमन की उत्कट प्यास लगी हुई है उन प्यासों को तुम नित्य अमृत पिलाकर तृप्त किया करते हो। यद्यपि वे मर्त्य हैं तो भी उन्हें तुम नित्य अमरपद देते हो, क्योंकि परसेवा करते ही उनकी अमृताभिलाषा तृप्त हो जाती है। उनका अपने अमर आत्मा से मेल हो जाता है। हम मर्त्य इसीलिए रहते हैं, क्योंकि हम अपने में ही आत्मा से देखते हैं, स्वार्थी हैं। जब मनुष्य एक-एक प्राणी में अपना-सा आत्मा देखने लगता है तब उसे आत्मा की अमरता दीखने लगती हे-सब भूतों में व्याप्त एक अमर आत्मा दीखने लगती है। तब मनुष्य सूरि (ज्ञानी) हो जाता है। तब उस ज्ञानी को सब पर-प्राणियों का क्लेश अपना क्लेश लगता है, उस पर-पीड़ा (जो उसकी आत्मपीड़ा हो जाती है) को बिना हटाये उसे आपनी आत्मा की अमृतता भङ्ग हुई दीखती है, अतएव वह परसेवा के लिए प्यासा होता है। परसेवा कर लेने पर उसे उस पीड़ित प्राणी की आत्मा से एकता मिल जाने से फिर अमृतत्व मिल जाता है। हे प्रभो! एवं, तुम उस धन्य पुरुष को प्रतिदिन श्रेष्ठ अमृतत्व देते हो। संसार द्वारा उसे 'श्रवस्' (यश) तो मिलता ही है परन्तु इस परसेवा से मिलनेवाला जो अलौकिक, अवर्णनीय ''मयः'' (सुख) है वह भी तुम उसे देते हो। हम मरे रहने वाले स्वार्थियों को उस स्वार्थ-त्याग के परमसुख का कुछ पता नहीं है। हम 'मर्त्य' तो डरते रहते हैं कि यदि हम पर-सेवा में, सर्वभूतात्मा में, अपने-आपको स्वाहा कर देंगे तो हम मर ही जाएंगे, हमें खाने को भी न मिलेगा, पर ऐसे अमृतत्व को पानेवाले मनुष्य अपने शरीर की चिन्ता छोड़ चुके होते हैं, वे अपने शरीर का धारण केवल पर-सेवा के लिए ही किये होते हैं, अतः हे प्रभो! उस अमृत को भोगने वाले महात्मा के मर्त्य शरीरर के लिए अन्न भी तुम ही दिया करते हो।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

यही सवाल तो महर्षि दयानन्द ने भी पूछा था!

.....दरअसल जो सवाल आज दिल्ली हाईकोर्ट ने पूछा है यही सवाल स्वामी दयानन्द पूछ रहे थे! कि क्या बुत, पुतले और मूर्त- मंदिर या मस्जिद किसी की प्रार्थना सुनते हैं? लेकिन यह भारत देश है बड़ी-बड़ी विशालकाय मूर्तियों और मस्जिदों का, इसी कारण यहाँ प्रार्थनाओं और अजानों की आवाजों में अक्सर गम्भीर सवाल आस्थाओं के नाम पर दब जाते हैं। इस वजह से इन दिनों धार्मिक स्थल अवैध निर्माण और अतिक्रमण का जरिया बन चुके हैं। लेकिन हद तब हो जाती है जब यह खेल धर्म के नाम पर खेला जाता है। भले ही संविधान ने भारत के सभी नागरिकों को समान माना हो पर कई बार ऐसा लगता है कि सरकारों के पास हिन्दुओं के लिए अलग कानून हैं और मुसलमानों के लिए अलग। .....

अगस्त 2013 नोएडा के कादलपुर गांव में एक मस्जिद की दीवार गिराने के आरोप में एक महिला एएसडीएम दुर्गा शक्ति नागपाल को निलंबित किया गया था। कारण दुर्गा नागपाल ने ग्राम समाज की भूमि पर अवैध ढ़ंग से बन रही एक मस्जिद गिरा दी थी। इस निलंबन ने इतना तूल पकड़ा था कि तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी तक को दखल देना पड़ा था। तब कथित धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने दुर्गा के निलंबन को सही ठहराया था। सच लिखें तो उस अतिक्रमण को जायज और एक अधिकारी के फर्ज को नाजायज मान लिया गया था।

इसके कई वर्ष बीत जाने के बाद अब हाल ही में दिल्ली हाईकोर्ट ने सवाल किया है कि ''क्या अतिक्रमण वाली जगह से की गई प्रार्थना ईश्वर सुनते हैं''? हाईकोर्ट ने यह सवाल दिल्ली के करोल बाग में लगी विशाल हनुमान मूर्ति और उसके आस-पास हुए अतिक्रमण को लेकर पूछा है। करोल बाग में लगी यह मूर्ति 108 फीट ऊंची है। कोर्ट ने पिछले महीने भी प्रशासन को इस मूर्ति को एयरलिफ्ट कराकर दूसरी जगह ले जाने का सुझाव दिया था।

दरअसल जो सवाल आज दिल्ली हाईकोर्ट ने पूछा है यही सवाल स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पूछ रहे थे! कि क्या बुत, पुतले और मूर्ति- मंदिर या मस्जिद किसी की प्रार्थना सुनते हैं? लेकिन यह भारत देश है, बड़ी-बड़ी विशालकाय मूर्तियों और मस्जिदों का, अन्धविश्वासों और पाखण्डों का इसी कारण यहाँ प्रार्थनाओं और अजानों की आवाजों पर अक्सर गम्भीर सवाल आस्थाओं के नाम पर दब जाते हैं। इस वजह से इन दिनों धार्मिक स्थल अवैध निर्माण और अतिक्रमण का जरिया बन चुके हैं। लेकिन हद तब हो जाती है जब यह खेल धर्म के नाम पर खेला जाता है। भले ही संविधान ने भारत के सभी नागरिकों को समान माना हो पर कई बार ऐसा लगता है कि सरकारों के पास हिन्दुओं के लिए अलग कानून हैं और मुसलमानों के लिए अलग।

यदि इस प्रसंग में उदाहरणस्वरूप थोड़ा पीछे नजर डालें तो वर्ष 2013 में दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक याचिका पर सुनवाई करने के बाद आदेश दिया था कि दिल्ली के 40 अवैध धार्मिक स्थलों को गिराएं और इसकी रपट न्यायालय को दें इन 40 में से 5 मस्जिदें, 1 मजार, 2 चर्च, 2 गुरुद्वारे, और शेष हिन्दू और जैन समाज के मन्दिर थे। जिन स्थलों को न गिराने की सूची में रखा गया है उनमें 17 मस्जिदें, 5 गुरुद्वारे, 1 चर्च और बाकी हिन्दू धार्मिक स्थल थे। न तोड़ने वाली सूची में ज्यादातर मस्जिद थीं। इस सूची का विश्लेषण करने से साफ हो गया था कि सरकार बहुसंख्यक वर्ग के कथित अवैध धार्मिक स्थलों को तोड़ने के लिए तो तैयार है पर वह मुसलमानों के अवैध मजहबी स्थलों को गिराने के लिए तैयार नहीं हैं। बस यहीं से एक खाई खड़ी होती है जो न्यायप्रणाली पर प्रश्नचिन्ह खड़े करती है।

प्रश्न खड़ा होता है कि सरकार को केवल अवैध मन्दिर ही क्यों दिखते हैं, वे अवैध मस्जिदें और मजारें क्यों नहीं दिखती हैं जो बीच चौराहों या सड़कों के किनारे तेजी से सरकारी जगह घेर कर अपना विस्तार कर रही हैं। संसद के आसपास भी तेजी से मजार और मस्जिदें बन रही हैं। दिल्ली के दिल कहे जाने वाले कनाट प्लेस में कई अवैध मस्जिदें और मजारें हैं। पूर्वी दिल्ली में देखें तो भजनपुरा के मेन रोड के बीचो-बीच मजार बनी है। हसनपुर डिपो के सामने व्यस्त स्वामी दयानंद मार्ग पर मजार है, वर्षो बाद भी इसे यहां से नहीं हटाया जा सका। पूरी दिल्ली में अवैध मजारों और मस्जिदों की एक तरह से बाढ़ आई हुई है पर उनकी ओर से कोर्ट ने अपनी आंखें बंद कर रखी हैं। कौन नहीं जानता कि लालकिले के सामने सुभाष पार्क में 24 घंटे के अन्दर एक मस्जिद खड़ी हो गई थी। उच्च न्यायालय ने इस मस्जिद को गिराने का आदेश भी दिया था। किन्तु उस समय दिल्ली सरकार की कृपा से यह मस्जिद बचा ली गयी थी।

ऐसा नहीं है कि सिर्फ मस्जिदें ही अवैध है बल्कि इतनी ही तादाद में मंदिर व अन्य समुदायों के धार्मिक स्थल भी मौजूद हैं। खिचड़ीपुर इलाके में जहां कई घरों के बीच थोड़ी-थोड़ी दूरी पर छोटे पार्कों के लिए योजना के अनुरूप जगह छोड़ी गई थी, वहां कई हिस्सों में उस स्थान पर सभी देवी-देवताओं के मंदिर बना दिए गए हैं। ये सिर्फ अकेली दिल्ली का हाल नहीं है यदि यहाँ से बाहर निकलकर उत्तरप्रदेश का रुख करें तो अमूमन ऐसे ही हालत हैं। सरकारी आंकड़े कहते हैं कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश को धता बताते हुए उत्तर प्रदेश में सार्वजनिक भूमि, पार्क और सड़क किनारे 38,355 धार्मिक स्थल अवैध रूप से मौजूद हैं। राजधानी लखनऊ में ही 971 गैर कानूनी धार्मिक स्थल हैं।

दरअसल यह कोई धार्मिक प्रक्रिया नहीं है इसके कई कारण अहम् बिन्दुओं में छिपे हैं एक तो यह सरासर राजनीति का हिस्सा है जिससे धर्म को जोड़ दिया जाता है दबे शब्दों में ही सही कहा तो यह भी जाता है कि कुछ माफिया जमीन कब्जाने के लिए वहां पहले मंदिर, मस्जिद या मजार बनवाते हैं। धीरे-धीरे वह जगह धार्मिक स्थल का दर्जा पा जाती है। वोटों के सौदागर और नेताओं के दबाव के बीच अधिकारी चाह कर भी कुछ नहीं कर पाते। जिस कारण अशिक्षित पिछड़े गरीब कमजोर लोगों की तरक्की को रोकने का यह धार्मिक षडयंत्र सफल हो जाता है। दूसरा परिस्थितिवश यदि कोई सरकार तोड़ना भी चाहे तो धर्म और मजहब के नाम पर संवेदनशील लोग इसे अपने धार्मिक गौरव पर आघात समझते हैं। तीसरा जब देश के बड़े नेतागण ही जानते हैं कि वोट मंदिरों और मस्जिदों के घालमेल से आते हैं तो इनके अत्यधिक निर्माण को नाजायज कौन कहेगा?

-सम्पादक

यूरोप का भव्य भ्रम

....सदियों से, यूरोप में एक समानता है, जो सभी लोगों को अलग-अलग भाषाएं बोलने से एकजुट करती रही है। यही आम तत्व उनकी ईसाई विरासत थी। इस सामान्य धार्मिक विरासत में एक दिलचस्प अतीत है जिसे इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन अब यूरोप कितना जल्दी इस्लामत हो रहा है? इतनी जल्दी है कि यहां तक कि इतिहासकार बर्नार्ड लुईस ने जर्मन अखबार डाइ वेलेट को स्पष्ट रूप से बताया था कि सदी के अंत तक यूरोप इस्लामी हो जाएगा।....

जब कोई इन्सान कमजोर होने के बावजूद जब खुद को ताकतवर समझने लगे तो मनोविज्ञान में इसे भव्य भ्रम का शिकार कहा जाता है। एक ऐसे ही रोग का शिकार आज यूरोपीय देश दिखाई देते हैं। कहा जा रहा है कि अगले 30 या 40 साल की बड़ी खबर इस प्रकार होगी कि यूरोपीय आबादी लुप्त हो गयी, जिनके पूर्वजों ने आधुनिक दुनिया का निर्माण किया था। जिन्होंने कम से कम पांच शताब्दियों के लिए पुराने महाद्वीप की असीम सफलता प्राप्त की है। प्रसिद्ध इतालवी पत्रकार ओरियाना फलासी का दावा है कि यूरोपीय महाद्वीप पर ईसाई धर्म का प्राचीन गढ़ तेजी से इस्लाम को महत्वाकांक्षी और मुखरता का रास्ता दे रहा है। वे साथ ही एक डरा हुआ मासूम सवाल भी उठा रहे हैं कि क्या इस्लाम यूरोप को जीत जाएगा?

नि:संदेह अगले 10 वर्ष विश्व सभ्यता के परिवर्तन में निर्णायक सिद्ध होंगे। होगा क्या अभी महज परिकल्पना सिर्फ इतनी है कि यदि आज यूरोपीय समुदाय अपनी विज्ञान की ताकत के भव्य भ्रम में डटा रहा तो भविष्य में यूरोप में धार्मिक प्रार्थना के गीतों के साथ भूगोल में भी परिवर्तन दिखाई देंगे। हमने आज से दो वर्ष पहले भी आर्य सन्देश में यूरोप के नये धार्मिक समीकरण पर प्रकाश डालते हुए लिखा था कि स्वदेशी यूरोपवासी नष्ट हो रहे हैं और विदेशी मुस्लिम समाज की संख्या निरंतर बढ़ रही है। किसी जनसंख्या को कायम रखने के लिये आवश्यक है कि महिलाओं का सन्तान धारण करने का औसत 2.1 हो परन्तु पूरे यूरोपीय संघ में यह दर एक तिहाई 1.5 प्रति महिला है और वह भी गिर रही है इसी रिक्त स्थान में इस्लाम और मुसलमान को प्रवेश मिल रहा है जहाँ यूरोपवासी बड़ी आयु में भी कम बच्चे पैदा करते हैं वहीं मुसलमान युवावस्था में ही बड़ी संख्या में सन्तानों को जन्म देते हैं। यदि आज यूरोप के आंकड़ों के नये धार्मिक समीकरण पर नजर डालें तो नई शरणार्थी नीति जोकि उदारवादी नीति के बाद फ्रांस में इस्लाम मत को मानने वालों की संख्या 20% जर्मनी 14% ब्रिटेन 18% स्वीडन 20% नीदरलैंड 10% और बेल्जियम 15% से ज्यादा आंकी जा रही है। विश्लेषकों का अनुमान है कि ब्रिटेन में, इस्लामी मस्जिदों ने चर्च ऑफ इंग्लैंड से प्रत्येक हफ्ते में अधिक लोगों की मेजबानी की है! पारम्परिक ईसाई धर्म के शून्य को भरना यूरोप में एक मजबूत, ऊर्जावान और युवा आंदोलन की जरूरत है। यदि यह वर्तमान प्रजनन दर पर जारी रही तो यूरोपीय लोग पिछले समय की गुजरी सभ्यता के रूप में दिखाई देंगे।

जब ऐसा होगा तो भव्य चर्च पुरानी सभ्यता के अवशेष बनकर रह जायंगे यह भी हो सकता है कि सउदी शैली का प्रशासन उसे मस्जिद में न परिवर्तित कर दे या तालिबान जैसा प्रशासन उसे उड़ा न दे? यूरोप के कुछ विश्लेषक आज इस पर चिन्ता जाहिर कर सवाल उठा रहे हैं कि क्या भविष्य में वेटिकन मक्का का आदेश मानने को बाध्य होगा? क्योंकि आज शरणार्थी आव्रजन की अनुमति के द्वारा यूरोप उदारवाद की चादर से अपने अंतिम संस्कार को ढ़ंक रहा है? पिछले दिनों इजरायल की विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट में कहा गया था कि इस्लाम अब यूरोप में दूसरा सबसे बड़ा धर्म है। इस रिपोर्ट के अनुसार, अधिकांश यूरोपीय संघ के राष्ट्र कट्टरपंथी मुसलमानों की मौजूदगी को राज्य की सुरक्षा और अपने जीवन जीने के ढ़ंग के लिए खतरा मानते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है, ''जनसांख्यिकीय आंकड़ों के मुताबिक, उच्च जन्म दर और निरंतर सामूहिक अप्रवासीकरण के कारण मुस्लिमों की संख्या निरन्तर बढ़ती रहेगी। इसका मतलब यह है कि इस तरह की बढ़ोत्तरी भविष्य में यूरोप के आकार पर एक काली परछाई दिखाई देगी।

कई सदियों तक, मुस्लिम, जो यूरोप के ईसाईयों में एक थे, ने अपने धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के लिए खतरे पैदा किया थे। अब दोनों पक्ष, एक दूसरे के धर्म प्रचार में दूसरे को प्रतिद्वंद्वी मानते हैं! इस्लाम और ईसाई धर्म दोनों के द्वारा दो धर्मों ने मानव जाति की निष्ठा पर ऐसे सार्वभौमिक दावे किए हैं, जिनमें एक के बीच दूसरा खुद को ''कैदी'' मानता है। इसी कारण वर्तमान घृणा अब इन दोनों संस्कृतियों के बीच में वृद्धि पर है।

सदियों से, यूरोप में एक समानता है, जो सभी लोगों को अलग-अलग भाषाएं बोलने से एकजुट करती रही है। यही आम तत्व उनकी ईसाई विरासत थी। इस सामान्य धार्मिक विरासत में एक दिलचस्प अतीत है जिसे इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन अब यूरोप कितना जल्दी इस्लामत हो रहा है? इतनी जल्दी कि यहां तक कि इतिहासकार बर्नार्ड लुईस ने जर्मन अखबार डाइ वेलेट को स्पष्ट रूप से बताया कि सदी के अंत तक यूरोप इस्लामी हो जाएगा। इसका मतलब है कि यदि वर्तमान रुझान जारी है, तो सदी के अंत तक मुसलमानों की संख्या ईसाइयों की संख्या से अधिक होने का अनुमान है।

शोधकर्ताओं का एक झुण्ड इसका कारण गिनाते हुए कहता है कि 2016 में, पूरे यूरोप में मुसलमानों की औसत उम्र 30.4 थी, अन्य यूरोपीय लोगों (43.8) के लिए औसत से 13 साल कम थी। इसे दूसरे तरीके से देखते हुए, यूरोप के सभी मुस्लिमों में से 50 फीसदी 30 साल से कम उम्र के हैं, इसके अलावा, यूरोप में औसत मुस्लिम महिला की प्रजनन दर 2.6 बच्चों की है, और गैर मुस्लिम महिला (1.6 बच्चों) पर टिकी है। यानि एक मुस्लिम महिला की प्रजनन दर लक्ष्य पर केन्द्रित है तो वहीं गैर मुस्लिम प्रजनन की स्वाभाविक प्रक्रिया के विरोध में खड़ी दिखाई देती है। यूरोप भर में, आने वाले मुस्लिम बहुमत के संकेत हैं। बेल्जियम के बंदरगाह शहर एंटवर्प में मुसलमानों में लगभग 50 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय हैं ब्रुसेल्स की एक चौथाई जनसंख्या मुस्लिम मूल की हो चुकी है। शायद अब दुनिया इंतजार में है कि कौन सा यूरोपीय देश इस्लामी शासन में पहले आएगा या फिर यूरोप में पहले मुस्लिम राष्ट्र का निर्माण किस इस्लामी शब्द के नाम पर होगा?

-विनय आर्य, महामन्त्री

बोध कथा

त्याग में आनन्द

एक साधु किसी नगरी में रहता था और भक्ति के गीत गाता था। लोग उसका सम्मान करते; उसे कितनी ही वस्तुएं देते। साधु ने अपने शिष्य से कहा- 'बेटा!चलो, किसी दूसरे नगर में चलें।'

शिष्य ने कहा-''नहीं गुरु महाराज! यहां चढ़ावा बहुत चढ़ता है। कुछ पैसे जमा हो जाएं, फिर चलेंगे।''

गुरु ने कहा-पैसे जमा करके क्या करेगा? चल मेरे साथ, पैसे जमा नहीं करने हमें।''

चल पड़े दोनों। शिष्य ने कुछ पैसे जमा कर रक्खे थे, उन्हें अपनी धोती में बांध रक्खा था। चलते-चलते मार्ग में नदी पड़ गई। एक नौका वहां थी। नौकावाला पार ले-जाने के लिए दो आने मांगता था। साधु के पास पैसे नहीं थे। शिष्य देना नहीं चाहता था। दोनों बैठ गये। दोपहर हो गई, संध्या हो गई; रात हो गई; वे बैठे थे। रात को नाविक अपने घर जाने लगा तो बोला-''बाबा! तुम यहां कब तक बैठे रहोगे? यह है जंगल, रात को सिंह इस किनारे पर पानी पीने आता है। अन्य पशु भी आते हैं, वे तुम्हें मार डालेंगे।''

शिष्य ने कहा- ''तुम हमें पार ले चलो।'' नाविक ने कहा-''मैं तो दो-दो आने लिये बिना नहीं ले-जा सकता।''

शिष्य को सिंह के विचार से लगा डर। धोती से चार आने निकालकर बोला-''अच्छा, नहीं मानता तो ले!''

नाविक ने चार आने लिये, उन्हें पार ले गया। दूसरे पार जाकर शिष्य ने कहा-''देखा गुरु जी! आप तो कहते थे कि पैसा इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं?

गुरु जी ने हंसते हुए कहा-''सोचकर देख बेटा! पैसा एकत्र करने से तुम्हें सुख नहीं मिला। पैसे को देने से मिला। सुख त्याग में है, एकत्र करने में नहीं।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पुस्तक परिचय

श्रीमद्दयानन्द प्रकाश

19वीं सदी। जब सारा भारत अंग्रेजों की दासता को अपना भाग्य समझकर सोया था। देशवासी अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़ने की बजाय उल्टा उनका श्रृंगार कर रहे थे। राजनैतिक और मानसिक दासता इस तरह लोगों के दिमाग में घर कर गयी थी कि आजादी की बात करना भी लोगों को एक स्वप्न सा लगने लगा था। देश और समाज को सती प्रथा, जाति प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, मूर्तिपूजा, छुआछूत एवं बहुदेववाद आदि बुराइयों ने दूषित कर रखा था, विभिन्न आडम्बरों के कारण धर्म संकीर्ण होता जा रहा था। ईसाइयत और इस्लाम अपने चरम पर था। हालाँकि भारत से मुगल शासन राजनैतिक स्तर पर खत्म हो गया था पर सामाजिक स्तर पर पूरी तरह हावी था। लोग वैदिक हिन्दू धर्म के प्रति उदासीन होते जा रहे थे। अपनी संस्कृति के प्रति कोई रुचि लोगों के अन्दर नहीं रही थी। देश पर अंग्रेज तो धर्म पर पाखंड हावी था और पूरा समाज विसंगतियों के जाल में कैद था। लेकिन उसी दौरान गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर एक बालक का जन्म (फाल्गुन) फरवरी माह सन् 1824 में हुआ था जिसका नाम मूलशंकर रखा गया जिसे विश्व में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से जाना गया।

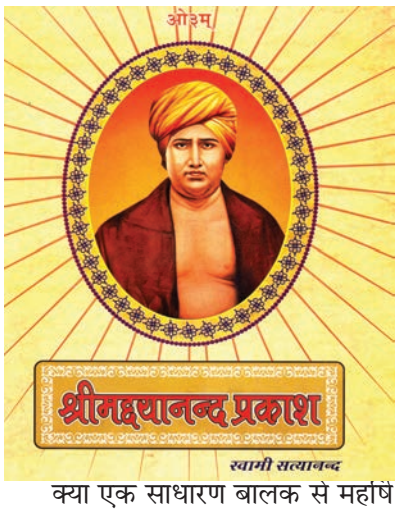

क्या एक साधारण बालक से महर्षि बनने तक का सफर आसान है? कई वर्षो के कठिन परिश्रम के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन से जुड़ी घटनाओं-यात्राओं आदि को एक सूत्र में बांधकर स्वामी सत्यानन्द जी ने पुस्तक बनाई श्रीमद्दयानंद प्रकाश एक ऐसी पुस्तक जिसे आप किसी के जन्मदिवस, विवाह या अन्य किसी भी कार्यक्रम में उपहार स्वरूप भेंट कर सकते हैं ताकि स्वामी के जीवन, उनकी वेद के प्रति जलाई अलख को हर कोई जान सके।

यह पुस्तक स्वाध्याय के लिए व ईष्ट मित्रों व रिश्तेदारों को सप्रेम भेंट करने हेतु आप भी प्राप्त कर सकते हैं-

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. नं. 9540040339

सभा की अन्तरंग के सम्मुख यज्ञ से हुई नई परम्परा की शुरुआत

सभा के एकाउंटेंट, सम्पादक, टाइपिस्ट, डिस्पैचर, सेल्समैन, पाचक, ड्राइवर आदि सभी कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं ने लिया यज्ञ प्रशिक्षण

प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ करना सीखे और यज्ञ कराए - धर्मपाल आर्य, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर 15 से 17 दिसम्बर 2017 के बीच दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड कार्यालय पर सभा कर्मचारियों सेवकों ने यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि ''इन शिविरों की सफलता व आर्य बन्धुओं की यज्ञ विज्ञान की जिज्ञासा को देखते हुए यह शिविर हर आर्य समाज में आयोजित करने की व्यवस्था हेतु सभी अधिकारियों को प्रयास करना चाहिए। जैसाकि आप सबको विदित है कि यज्ञ के प्रशिक्षणों में जो शोध हुए हैं उनका विस्तार पूर्वक वर्णन आर्य बन्धुओं को दिया जा रहा है ताकि जो यज्ञ पाप और पुण्य के नाम से किए जा रहे हैं उस भ्रांति को दूर करते हुए यज्ञ से वायु मण्डल में जो शुद्धता आएगी वह सारे मानव जाति के लिए लाभ दायक है। प्रधान जी ने आगे कहा ये पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर मील का पत्थर साबित होंगे यदि इनकी जानकारी जन साधारण तक पहुंच जाए।''

17 दिसम्बर को आयोजित आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक के पश्चात् यज्ञ प्रशिक्षण शिविर की पूर्ण आहूति दी गयी जिसमें सभा के समस्त कर्मचारियों सेवकों ने एकरूपता से यज्ञ की पूर्णाहूति डाली। शिविर सम्पन्न होने पर महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने जानकारी देते हुए बताया कि अगला वर्ष 2018 अन्धविश्वास निरोधक वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। इस सम्बन्ध में विभिन्न आर्य समाजों से आये पदाधिकारियों से आग्रह किया कि वे अन्ध विश्वास निरोधक नुक्कड़ नाटक, जादू के खेल, पत्रक, पुस्तकें जो भी हो सके वह कार्यक्रम व सामग्री तैयार करवायें व जन साधारण में किसी-न-किसी कार्यक्रम के बीच प्रर्दशित करें व वितरित करें, साथ ही विनय जी ने 6 से 14 जनवरी 2018 को दिल्ली में लगने वाले विश्व पुस्तक मेले में जमकर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए सभी से सहयोग की अपील की। - *सतीश चढ्ढा, संयोजक*

मातृशक्ति

आहार

गतांक से आगे -

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि हम अपने बच्चों को व स्वयं को क्या खाना चाहिए। कितना खाना चाहिए? अब हम पढ़ेंगे कि हमें क्यों खाना चाहिए?

हम क्यों खाएं? इसका सीधा-साधा उत्तर है, अपने शरीर पोषण के लिए, दूसरे शब्दों में अपने जीवन धारण के लिए। भोजन का उद्देश्य केवल मात्र अपने शरीर को स्वस्थ, बलवान् तथा नीरोग बनाना ही है। पेट भरना या अपनी जीभ को सन्तुष्ट करना नहीं। जो लोग अपने शरीर को नीरोग तथा बलवान् बनाने के लिए ही भोजन करेंगे, वह उतनी ही मात्रा में भोजन करेंगे जितनी कि उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है। इसके विपरीत जो केवल जिह्वा की तृप्ति के लिए ही खायेंगे, वह ऐसे ही पदार्थ खायेंगे जिससे उनकी जीभ को स्वाद मिले, न कि शरीर का पोषण हो और वह भी परिमित मात्रा में नहीं, अपितु अत्यधिक मात्रा में। ऐसा हानिकर भेजन या अधिक मात्रा में खाया हुआ भोजन शरीर को रोगी तथा निर्बल ही बनायेगा, स्वस्थ तथा बलवान् कदापि नहीं। इसीलिए बुद्धिमानों का कहना है-

'जीवन के लिए खाओ,
न कि खाने के लिए जीओ'

चौथा प्रश्न है- कब खायें। जिसका मोटा और स्पष्ट उत्तर है,जब शरीर मांगे। कहा जा चुका है कि शरीर को स्वस्थ, बलवान् तथा नीरोग रखने के लिए ही भोजन करना चाहिए। अत: जब शरीर अपनी इस आवश्यकता को पूर्ण करना चाहता है तो वह स्वयं अपनी मूकवाणी से आपसे भोजन मांगना प्रारम्भ कर देता है, और इसकी मोटी पहचान यह है कि उस समय पाचन शक्ति तेज होकर खूब भूख लगती है। अत: जब खूब भूख लगे तब समझना चाहिए कि अब शरीर पूर्व खाए भोजन को अपना अङ्ग बनाकर दोबारा अगले भोजन की मांग हमसे कर रहा है। किन्तु जब हम ऐसा नहीं करते अर्थात् बिना शरीर के मांगे, दूसरे शब्दों में बिना खूब भूख लगे भोजन खा लेते हैं तो पूर्व खाया भोजन भली प्रकार से न पचने के कारण उसमें सड़ांद पैदा हो जाती है। वह संड़ांद दोबारा खाये भोजन को भी सड़ाकर शरीर की रस, रक्त तथा वीर्य आदि धातुओं को कमजोर तथा दूषित बना देती है। अत: पहले भोजन के खूब पच जाने पर ही दोबारा भोजन खाना चाहिए अन्यथा नहीं। इस सम्बन्ध में आयुर्वेद कैसा सुन्दर नियम बताता है-

हिताशी स्याद् मिताशी स्यात्
कालभोजी जितेन्द्रियः। पश्यन् रोगान्
बहून् कष्टान् बुद्धिमान्
विषमाशनात्तु।।

बुद्धिमान् का कर्त्तव्य है कि विषम आहार से नाना प्रकार के रोगों तथा कष्टों को देखता हुआ सदा हितकर और परिमित आहार का सेवन करने वाला बने और हमेशा ठीक समय पर अर्थात् भूख लगने पर ही भोजन करे तथा सदा संयमी और जितेन्द्रिय रहे।

अब पांचवां और अन्तिम प्रश्न है-कैसे खाएं? इसका उत्तर इतना ही है कि जिस प्रकार खाने से हमारी जठराग्नि को भोजन पचाने में कम-से-कम परिश्रम करना पड़े। यह तभी हो सकता है जबकि हम खूब चबाकर तथा प्रसन्नचित्तहोकर शान्तिपूर्वक भोजन खाएं। खूब चबाए हुए भोजन को पचाने में जठराग्नि को बहुत कम परिश्रम करना पड़ता है और वह भोजन को शीघ्र पचाकर शरीर का अंङ्ग बना देती है तथा पाचन शक्ति हमेशा ठीक बनी रहती है। अत: खूब चबाकर भोजन करने वाला मनुष्य अपचन, बद्ध कोष्ठ आदि रोगों से हमेशा मुक्त रहता है। जब हम भोजन को दांतों से खूब चबाते हैं तो मुख से एक प्रकार का भोजन पचाने वाला रस निकलता है जोकि भोजन के साथ मिलकर उसे पचाने में सहायता देता है। दूसरा चबाकर खाने से भोजन अधिक मात्रा में नहीं खाया जाता। इसीलिए बुद्धिमानों ने कहा है-

कम खाना और खूब चबाना यही है
तन्दुरुस्ती का खजाना।।

खूब चबाने के साथ-साथ इस बात का भी ध्यान रखना अत्यावश्यक है कि भोजन खाते समय हम अपने अन्दर से रंज, गम, शोक, दु:ख तथा क्रोध के विचारों को दूर कर दें और खूब प्रसन्नचित्त होकर शान्तिपूर्वक भोजन खावें। जहां इस प्रकार भोजन करने से हमारा भोजन सुगमता से पचकर शरीर को स्वस्थ तथा बलवान् बनाने का कारण बनता है, वहां इसके विपरीत, चित्त को रंज, शोक तथा क्रोध आदि विकारों से दूषित बनाकर भोजन करने से उस भोजन से बना हुआ रस विष के रूप में परिणित हो जाता है और वह विष सारे शरीर में फैलकर शरीर को अनेक रोगों का स्थान बना देता है। आशा है अब हमारी बहनों को शरीर को स्वस्थ और बलवान् बनाए रखने का सबसे पहला साधन आहार अर्थात् भोजन के सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त हो गयी होगी।

साभार : आचार्य भद्रसेनकृत
आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

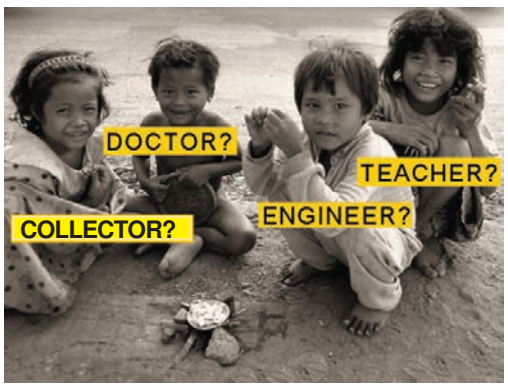

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से - जोड़िए अपने मित्रों को और दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

फेसबुक : आर्यसमाज

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

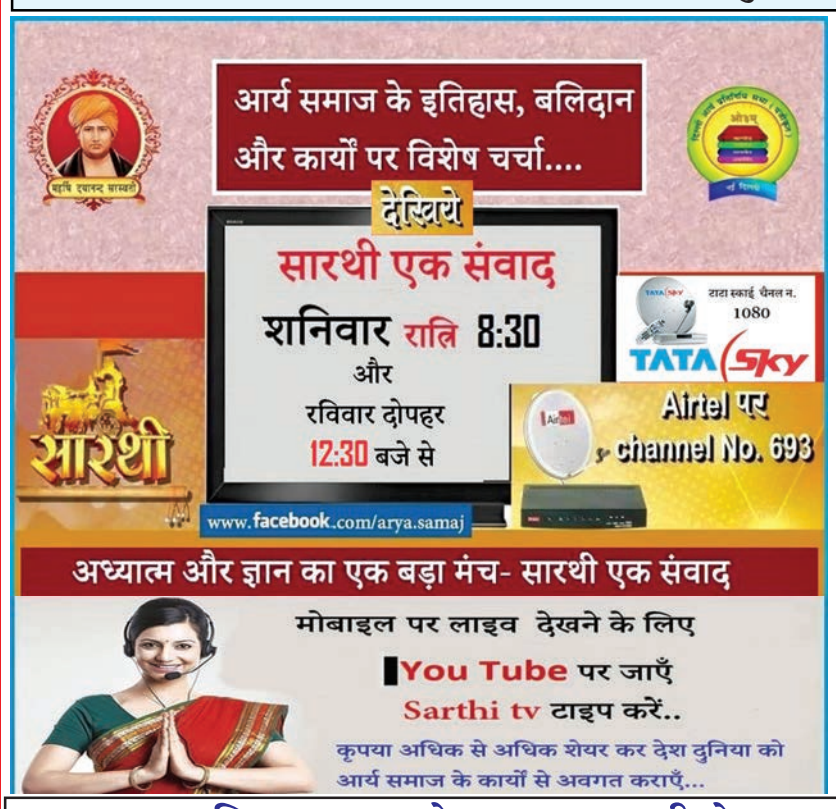

आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर (अन्दमान निकोबार) के अधिकारियों से भेंट एवं चर्चा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी, श्री एस. के. कोछड़ जी एवं श्री अनिल अरोड़ा जी गत दिनों नव स्थापित आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर के अधिकारियों से भेंट एवं विस्तार की चर्चा हेतु पोर्ट ब्लेयर पहुंचे और आर्य समाज के अधिकारियों से चर्चा की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उन्हें प्रचार कार्यों में सहयोग हेतु साहित्य एवं वर्ष 2018 के कैलेण्डर भी भेंट किए।

विश्व पुस्तक मेला - 6 जनवरी से 14 जनवरी, 2018 प्रगति मैदान, नई दिल्ली में

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

1. आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 513917 (द्वारा श्री धर्मपाल आर्य जी, सभा प्रधान) 11 स्टालों की बुकिंग कराने हेतु
2. आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2 21000
3. आर्यसमाज डी. ब्लाक विकासपुरी 21000
4. आर्यसमाज पंखा रोड जनकपुरी 11000
5. आर्यसमाज कीर्ति नगर 11000
6. आर्यसमाज प्रीत विहार 11000
7. आर्यसमाज सूरजमल विहार 5100
8. आर्य समाज मानसरोवर पार्क 5100
9. आर्यसमाज अशोक विहार-2 5100
10. आर्यसमाज जनकपुरी ए ब्लाक 5000
11. आर्यसमाज विवेक विहार 5000
12. श्री अशोक कुमार गुप्ता 5100

- क्रमश:

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

Veda Prarthana - 24(a)

Follow God's Teachings and Make the Whole World Noble

- Acharya Gyaneshwarya

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो
विश्वामार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।।

**Indram vardhanto apturah
krnvanto vishwam aryam.
Apaghananto aravnah.
(Rig Veda 9:63:5)**

Continue from Last Issue -

According to this mantra, the third method to promote nobleness in the world is to become generous yourself, donate your time and money and do selfless deeds for the welfare of the society. After that, by your own example promote generosity and selflessness among others in the society especially those persons who have been miserly or greedy in the past. Anybody who utilizes communal services for his/her or for one's family benefit such as distribution of food, water and electricity; schools and other institutions of higher learning; hospitals and ambulance; transportation services such as roads, buses, trains and airplanes; phone, radio and television services; as well as other services but contributes nothing or minimally for the welfare of the society, community or the nation should be persuaded to reciprocate, to become generous and at least do their fair share. If the person(s) still fails to participate in the societal welfare they should be socially ostracized as well as receive no respect from others in the society.

Therefore, O all arya persons come together and united together we will commit ourselves to follow God and His message as described in the Vedas. First we will become virtuous and noble in our own thoughts, words and deeds and then make utmost effort to make the whole world noble. We will try to make such a world where everybody is devoted to and worships the same One True God who as stated before is Omnipresent, Omnipotent, Omniscient, Universal Protector, Benefactor, Kind and Just and gives us appropriate rewards based on our karmas/deeds and does not discriminate by favoring one group of "believers" while being prejudiced against others because they believe in particular prophets or alleged God's incarnations. May the world have one set of just laws, one noble culture, and one common language. May there be free, compulsory, high quality, equal education for all based on our ancient gurukul education system wheeby students learn from virtuous, capable and loving teachers and acquire both spiritual and secular knowledge, wisdom as well as good life habits such as hard-work, honesty, integrity and the ability to withstand and hardships that come in life. May all persons thank God every day by performing sandhya (individual meditation and prayer) and honor God and noble persons by doing daily yajna. May there be no dishonesty, deception, drinking, use of intoxicating drugs, gambling, prostitution and debauchery in the society as well as pusons guilty of them be appropriately punished.

Dear God with your grace, may there be promotion of virtuous values, equality and fair justice for all in the society. May the rule of the world be in hands of a council of learned, wise, virtuous and noble persons who think of the societal welfare first instead of their personal selfish interests. Such a system should replace the current system of autocracy or pseudo-democracy run by corrupt political parties who are beholden to select wealthy donors, corporations or corrupt religious autocratic authorities. Anybody who disobeys just societal laws should by severely punished in a timely manner (without delay) to discourage others from doing the same. May we again be successful in creating such a world as our history tells us that it existed from the beginning of mankind until sometime before Mahabharata War. It is possible to recreate a noble world if we all arya persons join together with a firm commitment to help each other in a determined manner to promote virtuous values and faith in One True God. Dear God, bless all arya persons in the world so they may be successful in the near future to recreate such a single world with one society and culture with one set of just laws which in our scriptures was called a Chakravarti Rajya i.e. one all encompassing noble kingdom.

(For benefits of virtuous conduct in life also see mantra#7, 9, 19, 25, 26, 27 and 29)

To be continued...

प्रेरक प्रसंग

वह आपका रक्त पिपासु रहा है

निजाम राज्य में विशूचिका रोग फैला। मौत अपना खुला खेल खेल रही थी। रोग से आतंकित जनता को सूझ नहीं रहा था कि करें तो क्या करें? जाएँ तो कहाँ? आर्यसमाज ने तब रोगियों की सेवा का कार्य आरम्भ किया। श्री भाई श्यामलालजी के पास विशूचिका रोग की एक अचूक औषधि थी। आप आर्यवीरों को साथ लेकर घर-घर जाकर रोगियों में यह औषधि बाँटते थे।

किसी ने भाईजी को सूचना दी कि उदगीर (महाराष्ट्र) का एक नामी मुसलमान गुण्डा+ भी रोग की लपेट में आ गया है। यह गुण्डा भाईजी का घोर शत्रु था। इसने सदा आर्यों पर वार किये थे। यह भाईजी के प्राण लेने के षड्यन्त्र रचता रहा। भाईजी ने आर्यवीरों से कहा, 'चलो उसका पता करें। उसे भी बचाना चाहिए।' सबने रोका-टोका मत जाइए। वह बड़ा भयंकर व्यक्ति है। सदा आपकी जान लेने का उसने यत्न किया। कोई भला व्यक्ति हो तो बचाया भी जाए। आप उस मुहल्ले में गये तो ठीक न होगा। संकट मोल लेनेवाली बात है।

भाई श्यामलाल न माने। वे कहने-सुनने पर भी न टले। उस धूर्त्त को अचेत अवस्था में वहाँ पाया। घरवाले भी ऐसे को कहाँ पूछते हैं। भाईजी ने औषधि दी। सेवा की। वह बच गया। अब तो वह उनका भक्त बन गया। सदा यही कहता था कि श्यामभाई मनुष्य नहीं, फरिश्ता है। आर्यसमाजी तो सचमुच देवपुरुष होते हैं। उसका हृदय-परिवर्तन हो गया। अब उसने आर्यों के प्रचार पर पत्थर फेंकना-फिकवाना और आक्रमण करना छोड़ दिया। यह सब कुछ तभी हो पाया जब रक्तसाक्षी प्रणवीर श्यामभाई वकील शीश तली पर धर, उस दुष्ट पिशाच के मुहल्ले में सेवा-यज्ञ रचाने पहुँच गये।

+यह घटना प्राचार्य कृष्णदत्त ने भाई जी के जीवन चरित्र में दी है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ ! संस्कृत सीखें

समास प्रकरण - 35

गतांक से आगे....

द्विगु तत्पुरुष - यह कर्मधारय समास का ही उपभेद है। जब कर्मधारय समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक हो तो वह द्विगु समास हो जाता है। अधिकतर यह समाहार(समुदाय) अर्थ में होता है अतः एकवचन, नपुंसकलिङ्ग व कहीं-कहीं स्त्रीलिङ्ग में होता है।

उदाहरण- त्रयाणां लोकानां समाहारः- त्रिलोकम् (तीन लोकों का समूह)। यहां समास में पूर्व-पद संख्यावाचक है व समस्तपद समूह को कहने में आया है अतः द्विगु समास हो गया ।

2. त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्।
3. चतुर्णा युगानां समाहारः = चतुर्युगम्।
4.पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्।
5. शतानाम् अब्दानां समाहारः = शताब्दी।
6. दशानां वर्षाणां समाहारः = दशाब्दी।
7.सप्तानां खट्वानां समाहारः= सप्तखट्वम्
8.अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः = अष्टाध्यायी ।
9. दशानां पूलानां समाहारः= दशपूली।
10. पञ्चानां गवां समाहारः= पञ्चगवम्।

नञ् तत्पुरुष समास - ''नहीं'' अर्थ वाले ''नञ्'' का जब दूसरे शब्द के साथ समास हो जाता है तो वह नञ् समास कहलाता है। यदि बाद में व्यञ्जन हो तो नञ् का ''अ'' शेष रहता है व बाद में स्वर हो तो अन् रहेगा ।

उदाहरण- न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः । यहां ''न'' व ''ब्राह्मण'' का समास होकर ''अब्राह्मणः'' शब्द बना व समस्त पद में न का अ शेष रहा ।

2. न स्वस्थः = अस्वस्थः।
3. न न्यायः = अन्यायः।
4. न प्रियः = अप्रियः।
5. न सुन्दरः = असुन्दरः।
6. न उपस्थितः = अनुपस्थितः।
7. न उचितः = अनुचितः।
8. न आगतः = अनागतः।
9. न उदारः = अनुदारः।
10. न ईश्वरवादी= अनीश्वरवादी।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

महिला आर्य समाज मानसरोवर का 23वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महिला आर्य समाज मानसरोवर ने 26 नवम्बर 17 को चार दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ 23वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ यज्ञ ब्रह्मा पं. देशराज सतयेश्षु (भरतपुर) तथा वेदपाठी श्रीमती स्मृति आर्या (दिल्ली) व श्रीमती श्रुति (जयपुर) रहे। मुख्य अतिथि राजस्थान के लोकायुक्त माननीय सज्जन सिंह कोठारी ने अने सम्बोधन में वैदिक यज्ञों को पर्यावरण संकट निवारण का एक मात्र साधन बताया। आ. लोकायुक्त द्वारा श्रीमती संतोष नारायण रचित वैदिक भजन माला पुस्तक व ओ३म् का विमोचन किया। शान्ति पाठ कार्यक्रम हुआ। *-ईश्वर दयाल माथुर, पत्रकार*

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को विदित ही है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ '**मैं आर्य समाजी कैसे बना**' आरम्भ किया गया था। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बनें। यह स्तम्भ पुनः आरम्भ किया जा रहा है। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha @ yahoo. com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

'सम्पादक'
आर्य सन्देश साप्ताहिक
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
- सम्पादक

अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' कोटा के जनप्रतिनिधियों को भेंट

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' कोटा के जनप्रतिनिधियों व गणमान्य महानुभावों को नि:शुल्क भेंट किए गये। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढ़ा जी ने बताया कि अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश जन-जन तक पहुंचाने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। जिससे आर्य समाज की वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार किय जा सके। इस दौरान विधायक प्रहलाद गुंजल, न्यास अध्यक्ष राम कुमार मेहता, एस.के अग्रवाल को सत्यार्थ प्रकाश भेट किए गये। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला मंत्री कैलाश बाहेती, भीमगंजमण्डी के प्रधान प्रेमनाथ कौशल, डीएवी की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, पं. रामदेव शर्मा, शोभाराम आर्य, लालचन्द आर्य, आर.सी.आर्य, राधाबल्लभ राठौर, वेदमित्र वैदिक, पं. श्योराज वशिष्ठ, किशन आर्य समेत अन्य कई लोगों का सहयोग सराहनीय रहा।

-अर्जुन देव चड्ढा, जिला प्रधान

आर्य समाज श्रीनिवासपुरी एक प्रेरणात्मक कार्य

आर्य समाज श्रीनिवासपुरी के लगभग 4 वर्षों से सेवारत धर्माचार्य श्री शशीकान्त शास्त्री जी का पिछले माह युवावस्था में ही अकस्मात निधन हो गया था। आर्य समाज श्रीनिवासपुरी के सभी अधिकारियों, सदस्यों एवं सेवकों की ओर से शास्त्री जी के दाहसंस्कार एवं समस्त परिवार को उनके पैत्रिक स्थान उड़ीसा तक ले जाने का लगभग 50 हजार का व्यय व शास्त्री जी की 6 माह की पुत्र के लालन-पालन के लिए 1 लाख रुपये की राशि सुकन्या योजना के अन्तर्गत बैंक में जमा दिया गया है व 50 हजार रुपये नकद (लगभग कुल 2 लाख का सहयोग) देकर अमूल्य योगदान दिया साथ ही आर्य समाज श्रीनिवासपुरी की ओर से शास्त्री परिवार को भविष्य में किसी भी प्रकार की परेशानी में सहयोग करने का आश्वासन भी दिया गया है।

आर्य समाज श्रीनिवासपुरी द्वारा श्री शशीकान्त शास्त्री जी के परिवार के लिए किये गये सहयोग के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज श्रीनिवासपुरी का धन्यवाद करती है । अन्य समाजों के लिए आर्य समाज श्रीनिवासपुरी प्रेरणा स्रोत है। इससे हमें सहयोग की भावना को अपने अन्दर जाग्रत करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

- सम्पादक

वैदिक पुस्तकालय हेतु पुस्तकें दान दें

सभी आर्य भद्र महापुरुषों और माताओं-बहनों को सूचित किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक विशेष व विशाल पुस्तकालय निर्माण की तैयारी आरम्भ की जा चुकी है। यह पुस्तकालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त होगा। इस पुस्तकालय में सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय ''ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण साहित्य के सभी संस्करण, ऋषि दयानन्द और अन्य सभी आर्य महापुरुषों के जीवन-चरित्र, राष्ट्रीय एवं आर्य समाज विषयक ऐतिहासिक पुस्तकें, विभिन्न मत-सम्प्रदायों से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं में साहित्य का संग्रह एक ही पुस्तकालय में उपलब्ध करवाने का प्रयास है। प्राचीन और नवीन हर तरह की पुस्तकें इस पुस्तकालय में संग्रहीत होगी। इस पुस्तक संग्रहालय में साहित्य को सुरक्षित करने की भी विशेष योजना है।

नोट : यदि आपके पास ऐसी कोई विशेष पुस्तकें हो जो वर्तमान समय में अप्राप्त है तो आप ऐसी पुस्तकें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को पुस्तकालय हेतु दान दे सकते हैं। **दानदाता कृपया सम्पर्क करें** - *आचार्य दिनेश शास्त्री*
मो. 7597454681, 7737904950

मनुस्मृति

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

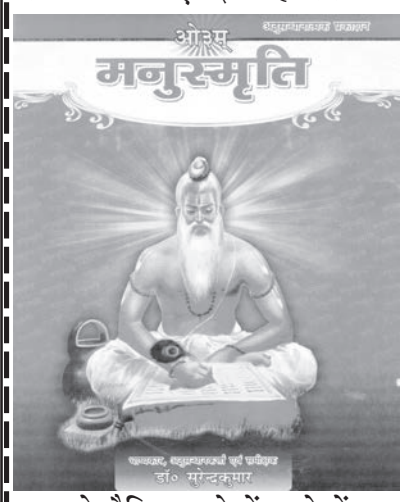

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : 600/-

विशेष छूट के साथ : 500/- में

(डाक व्यय अतिरिक्त)

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं हेतु सूचना

आर्य स्वास्थ्य परिषद् का गठन

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं तथा आर्यजनों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज की एक सेवा ईकाई आर्य स्वास्थ्य परिषद् का निर्माण करना चाहती है। इस हेतु दिल्ली की आर्यसमाजों में संचालित औषधालयों (डिस्पेंसरी)/ चिकित्सीय सेवाओं की जानकारी अपेक्षित है, जिससे उनके समय, सेवा, अनुभवों का लाभ प्राप्त करके जन-साधारण को उपलब्ध कराया जा सके। अत: उन सभी आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं जिनमें किसी भी प्रकार की कोई भी स्वास्थ्य सेवा एलौपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी, प्राकृतिक चिकित्सा आदि कोई भी पद्धति संचालित हैं। कृपया वे इस व्यवस्था से सम्बन्धित अधिकारियों/ व्यक्तियों के नाम, पदनाम, पते, फोन नं. आदि औषधालय/ चिकित्सालय/ डिस्पैंसरी के संक्षिप्त विवरण के साथ यथाशीघ 'महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते अथवा सभा की ईमेल aryasabha@yahoo.com पर भिजवाने की कृपा करें ताकि सभा आप सभी के सहयोग से इस दिशा में आगामी कार्यवाही हेतु आगे बढ़ सके। अधिक जानकारी के लिए कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी 9540040322/ 9717174441 से सम्पर्क करें।

-विनय आर्य, महामन्त्री

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2018 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

सोमवार 18 दिसम्बर, 2017 से रविवार 24 दिसम्बर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21/22 दिसम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 दिसम्बर, 2017

ओ३म्

91 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

सोमवार, 25 दिसम्बर, 2017

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक
स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक
स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।
नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	सतीश चड्ढा	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

ओ३म्
thearyasamaj.org

37 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

अमर हुतात्मा-स्वामी श्रद्धानन्द

भारत के नर-नारी जागी! आगे कदम बढ़ाओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द का प्यारा शिष्य निराला था।
सच्चा ईश्वर विश्वासी था, देश भक्त मतवाला था।।
ताई धर्मवती देवी ने, उस पर लाड़ लड़ाया था।
नानक चन्द पिताजी ने, अधिवक्ता पुत्र बनाया था।।
जीवन चरित्र पढ़ो स्वामी का, देश भक्त बन जाओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।
भारत था परतंत्र, यहां था, अंग्रेजों का राज सुनों।
करते थे नित जुल्म विधर्मी, था तब दुखी समाज सुनों।।
गीत गड़रियों के वेदों को, ईसाई बतलाते थे।
भोले-भाले लोगों को, पंजे में दुष्ट फंसाते थे।।
गऊमांस खाते थे गोरे, समझो अरु समझाओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।
स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तब, कांगड़ी गुरुकुल खोला था।
पापी अंग्रेजों के सिर पर, मारा बम का गोला था।।
वैदिक शिक्षा जारी की थी, काम बड़ा अनमोला था।
दुष्ट विधर्मी अंग्रेजों का, जिसे देख दिल डोला था।।
महावीर नेता को जानो, वीर बनो यश पाओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।
पुत्र-पुत्रियों के होते भी, धन दौलत सब दान किया।
तुम्हीं बताओ! किस नेता ने, ऐसा कर्म महान किया।।
रौलट ऐक्ट आया भारत में, अपना सीना तान दिया।
संगीनों का किया सामना, स्वामी ने ऐलान किया।।
अंग्रेजो भागो, भारत से, हमें न अब बहकाओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।
जो भारतवासी, ईसाई, मुसलमान, बन जाते थे।
स्वामी श्रद्धानन्द उन्हें, शुद्धी करके अपनाते थे।।
विघ्न और बाधाओं से वे, कभी नहीं घबराते थे।
जो लेते थे ठान बहादुर, पूरा कर दिखलाते थे।।
देशवासियो! होश करो तुम, काम धर्म के आओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।
स्वामी जी ने मोहनदास गांधी पर पूरा प्यार किया।
कांगड़ी गुरुकुल के उत्सव पर, उसे महात्मा नाम दिया।।
मोहन दास गांधी ने उनका, सब ऐहसान भुलाया था।
शुद्धी गलत बताई थी, दुष्टों का साथ निभाया था।।
''नन्दलाल'' निर्भय शुद्धी का, फिर से चक्र चलाओ तुम।
स्वामी श्रद्धानन्द तपस्वी, नेता के गुण गाओ तुम।।

- पं. नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्रा+पो. बहीन, पलवल (हरियाणा)मो. 9813845774

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह